PAPER NAME

JALWAYU.docx

WORD COUNT 1632 Words	CHARACTER COUNT 7539 Characters
PAGE COUNT 11 Pages	FILE SIZE 25.2KB
SUBMISSION DATE Jul 9, 2026 3:00 PM GMT+5:30	REPORT DATE Jul 9, 2026 3:00 PM GMT+5:30

0% Overall Similarity

This submission did not match any of the content we compared it against.

- 0% Internet database
- 0% Publications database
- Crossref database
- Crossref Posted Content database
- 0% Submitted Works database

Excluded from Similarity Report

- Bibliographic material
- Quoted material
- Cited material
- Small Matches (Less then 14 words)

जलवायु संकट के दौर में मानवीय विकास एवं संतुलित जीवन के लिए शिक्षा की भूमिका

कुमारी महिमा

एम.एड.

हरि नारायण सिंह इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर्स एजुकेशन, सासाराम, बैजला, रोहतास, बिहार

सार

वर्तमान समय में एक गंभीर वैश्विक चुनौती के रूप में जलवायु संकट उभरकर सामने आया है, जो समूचे विश्व के प्राकृतिक संसाधनों, मानवीय जीवन एवं पारिस्थितिक संतुलन को पूरी तरह से प्रभावित कर रख दिया है। उपर्युक्त समस्या के समाधान हेतु आज के समय में केवल वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपाय पर्याप्त नहीं दिख रहा है, बल्कि आज आवश्यकता है तो मानवीय जीवनशैली, व्यवहार एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन की। प्रस्तुत शोध का मुख्य एकमात्र उद्देश्य जलवायु संकट के संदर्भ में मानवीय विकास तथा संतुलित जीवन के निर्माण हेतु शिक्षा की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना। परिणामतः दृष्टिगोचर होता है कि शिक्षा के द्वारा मूल्य विकास, जागरूकता तथा सतत जीवनशैली को प्रोत्साहित कर जलवायु संकट के प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन पूरी तरह से द्वितीयक स्रोतों

वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इस शोधाध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षा ही वह एकमात्र अध्ययन है जिसके द्वारा मानवीय व्यवहार में परिवर्तन करके जलवायु संकट को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: मानवीय विकास, जलवायु संकट, संतुलित जीवन, सतत विकास शिक्षा।

प्रस्तावना

आज इक्कीसवीं सदी में जलवायु संकट मानवीय सभ्यता के सम्मुख सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। वर्तमान समय में शहरीकरण, वनों की कटाई, प्राकृतिक संसाधनों और औद्योगिकीकरण के अनियंत्रित दोहन के परिणामस्वरूप पृथ्वी का पर्यावरणीय संतुलन दिनोंदिन बिगड़ता जा रहा है। जिसके कारण समुद्र स्तर में वृद्धि, सूखा, ग्लोबल वार्मिंग, बाढ़ एवं जैव विविधता में ह्रास जैसी अनेकों समस्याएँ देखने को दिन प्रतिदिन मिल रही हैं।

आज पर्यावरण तक ही उपरोक्त समस्याओं का प्रभाव सीमित नहीं है, अपितु इसने आर्थिक, सामाजिक तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को भी जन्म दिया है। अतएव आज एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है उपरोक्त संकट से निपटने के लिए, जिसमें शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकती है।

प्च्बब् (2021) की रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्तमान समय में वैश्विक तापमान में निरंतर वृद्धि देखने को मिल रही है, जिसके परिणामस्वरूप मौसमी घटनाएँ अपने चरम पर बढ़ रही हैं। जिसके कारण हमारे भारत देश में इसके प्रभाव को अधिक गंभीर रूप से देखा जा रहा है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- जलवायु संकट की प्रकृति एवं प्रभावों का विश्लेषण करना।
- मानव विकास की अवधारणा को स्पष्ट करना।
- मानवों के संतुलित जीवन शैली की आवश्यकता को समझाना।
- शिक्षा की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- शिक्षा के द्वारा सतत विकास के उपाय सुझाना।
- जलवायु संकट के निराकरण में शिक्षा की व्यावहारिक भूमिका का विश्लेषण का अध्ययन करना।

अनुसंधान प्रश्न

s क्या वास्तव में शिक्षा वर्तमान समय में जलवायु संकट के प्रति जागरूकता ला सकती है?

s क्या शिक्षा मानव के संतुलित जीवन शैली को विकसित करने में सहायक सिद्ध हो सकती है?

s मानव के विकास में पर्यावरणीय शिक्षा की भूमिका क्या है?

s क्या शिक्षा के द्वारा से व्यवहारिक परिवर्तन संभव है जिसके माध्यम से जलवायु संकट को कम किया जा सके?

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र (त्मेमंतबी च्ंचमत) वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें शोधार्थी द्वारा द्वितीयक स्रोतों जैसे- शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, पुस्तकों और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित रिपोर्टों का अध्ययन किया गया है। यह शोध अध्ययन गुणात्मक शोध प्रकृति का द्योतक है और इसमें मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

विश्लेषण एवं चर्चा

उद्देश्य क्र. 01 के अनुसार

वर्तमान समय में इस धरा पर जलवायु संकट पृथ्वी की जलवायु प्रणाली में दीर्घकालिक और गंभीर परिवर्तन को प्रदर्शित करता है। जलवायु प्रणाली में प्रमुख रूप से वनों की कटाई, औद्योगिक प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन शामिल हैं। जलवायु संकट का प्रभाव बहुआयामी हैं जिसे निम्नांकित बिन्दुओं के माध्यम से समझेंगे-

- ग्लोबल वार्मिंग, समुद्र स्तर में वृद्धि और जैव विविधता पर्यावरणीय प्रभाव के ही कारण हैै।

- आर्थिक प्रभाव के रूप में कृषि उत्पादन में कमी, संसाधनों की कमी दृष्टिगोचर होती है।

- सामाजिक प्रभाव के कारण ही समाज में गरीबी, पलायन और असमानता देखने को मिलती ळें

- जलवायु संकट के कारण ही स्वास्थ्य प्रभाव पर हीट स्ट्रोक, कुपोषण और बीमारियों का प्रसार देखने को मिलता है।

उपर्युक्त बिन्दुओं के आधार पर हम देखते हैं कि आज के समय में जलवायु संकट मानवीय जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करता है। अंततः कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में जलवायु संकट बहुआयामी समस्या है।

उद्देश्य क्र. 02 के अनुसार

प्रस्तुत शोध में मानवीय विकास से अभिप्राय मानव के समग्र (सम्पूर्ण) विकास शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक पहलू से है। जलवायु संकट के आधार पर मानव विकास का अर्थ सिर्फ आर्थिक वृद्धि नहीं है अपितु पर्यावरणीय जागरूकता, सामाजिक उत्तरदायित्त्व एवं मानवीय जिम्मेदारी है। इसलिए वर्तमान समय में मानवीय विकास को सतत विकास के साथ जोड़ना चाहिए। प्रस्तुत शोध से स्पष्ट होता है कि

वर्तमान समय में मानवीय विकास को सतत विकास से जोड़ना आवश्यक है।

उद्देश्य क्र. 03 के अनुसार

वर्तमान समय में आज उपभोक्तावादी संस्कृति के परिणामस्वरूप ही संसाधनों का अत्यधिक उपयोग देखने को मिल रहा है, जिससे कारण पर्यावरण पर दबाव बढ़ता दिख रहा है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से प्रदर्शित होता है कि आज जलवायु संकट के समय संतुलित जीवन शैली अपनाने की आवश्यकता क्यों है? जिसे हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से देखेंगे-

- संतुलित जीवनशैली संसाधनों के संरक्षण में सहायक है क्योंकि यह पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखती है।
- संतुलित जीवनशैली मानव के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है, जैसे-सीमित उपभोग, ऊर्जा एवं जल संरक्षण, पुनर्चक्रण।

इस तरह इस शोध के माध्यम से स्पष्ट होता है कि मानवों की संतुलित जीवन शैली जलवायु संकट को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। प्रस्तुत शोध से पता चलता है कि मानवों की संतुलित जीवनशैली जलवायु संकट को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

उद्देश्य क्र. 04 के अनुसार

- शिक्षा ही वह एकमात्र माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्तियों को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों एवं कारणों के प्रति जागरूक किया जा सकता है।

- शिक्षा के द्वारा व्यक्ति पर्यावरण के प्रति जागरूक होकर पर्यावरण के प्रति अनुकूल व्यवहार को अपनाता है, जैसे- ऊर्जा बचत, जल संरक्षण, मृदा संरक्षण, प्लास्टिक का कम उपयोग।

- शिक्षा ही वह माध्यम है जो व्यक्तियों में पर्यावरण के प्रति नैतिकता विकसित करती है, जिससे उनमें प्रकृति व पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना का विकास होता है।

- शिक्षा के द्वारा व्यक्तियों में ऐसे कौशल विकसित होते हैं जिसके द्वारा व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण हेतु नवाचार का प्रयोग कर सकें।

- पर्यावरणीय जागरूकता तथा सतत विकास को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य माना गया है।

अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा जलवायु संकट के प्रभाव से निपटा जा सकता है क्योंकि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है।

उद्देश्य क्र. 05 के अनुसार

पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय शिक्षा को अनिवार्य करना।

पाठ्यक्रम में प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण को स्थान देना।

व्यावहारिक गतिविध्यिों में वृक्षारोपण को बढ़ावा देना।

जल संरक्षण के प्रति व्यक्तियों को जागरूक करना।

ई-लर्निंग हेतु अधिक से अधिक जागरूक करना।

सामुदायिक भागीदारी हेतु जन जागरूकता कार्यक्रम का स्थानीय स्तर पर पहल करना।

शिक्षा में प्ब्ज् का उपयोग करके पर्यावरणीय शिक्षा को प्रभावी बनाया जा सकता है।

हमारे विद्यालयों में ग्रीन कैंपस की अवधारणा को बढ़ावा देना।

उपर्युक्त बिन्दुओं के आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षा ही वह माध्यम है जो सतत विकास को व्यवहारिक रूप से लागू करने में सशक्त भूमिका का निवर्हन करती है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से स्पष्ट होता है कि शिक्षा के द्वारा सतत विकास की संकल्पना को मानवीय में व्यवहार में लाकर साकार किया जा सकता है।

चुनौतियाँ

वर्तमान समय में पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति निम्नांकित समस्याएँ दृष्टिगोचर होेती हैं-

वर्तमान सेमय में पर्यावरण शिक्षा का सीमित क्षेत्र में क्रियान्वयन होना क्योंकि अधिकांश स्थानों पर आज भी इसका प्रभावी क्रियान्वयन देखने को नहीं मिल रहा है।

संसाधनों की कमी देखने को मिलती है। कहने का तात्पर्य है कि वर्तमान समय में भी आवश्यक साधनों एवं तकनीकी संसाधनों का अभाव देखने को मिल रहा है।

व्यक्तियों में जागरूकता का अभाव देखने को मिलता है। हमारे देश में लोग आज भी जलवायु संकट को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं न ही समझते हैं।

व्यक्तियों के व्यवहार परिवर्तन में कठिनाई देखने को मिलती है क्योंकि लोगों की आदतों में परिवर्तन लाना कठिन होता है।

सुझाव

- शिक्षा के क्षेत्र पर्यावरणीय विषयों को अनिवार्य रूप से लागू किया जाए।
- पर्यावरण के प्रति विशेष रूप से शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए।
- व्यक्तियों के बीच व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।
- प्रांतीय सरकार और समाज के मध्य समन्वय स्थापित किया जाए।

**	सरकार द्वारा पर्यावरण शिक्षा नीति स्तर पर कठोर कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।**

**	विद्यालयी स्तर पर जागरूकता फैलरने हेतु प्ब्ज् का अधिकाधिक उपयोग किया जाए।**

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधाध्ययन से स्पष्ट होता है कि आज जलवायु संकट सिर्फ पर्यावरणीय समस्या न रहकर मानवीय अस्तित्त्व से जुड़ा हुआ ज्वलन्त मुद्दा है। जब तक मानवों के व्यवहार व जीवनशैली में परिवर्तन नहीं आएगा तब तक जलवायु संकट का समाधान संभव नहीं होगा।

उपर्युक्त परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम शिक्षा है। शिक्षा मानवीय समाज में सिर्फ जागरूकता नहीं उत्पन्न करती, अपितु व्यक्ति को नैतिक रूप से जिम्मेदार तथा संतुलित जीवन जीने के लिए अभिप्रेरित भी करती है। परिणामतः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शिक्षा के द्वारा ही मानवीय विकास को सुदृढ़ करते हुए एक संतुलित और सतत समाज का निर्माण किया जा सकता है। भविष्य में शिक्षा के द्वारा सतत विकास को बढ़ावा देकर ही जलवायु संकट से प्रभावी रूप से निपटा जा सकता है।

संदर्भ

भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय.

यूनेस्को (2017). एजुकेशन फॉर ससटेनेबल डेवलपमेंट गोल्स.

आईपीसीसी 2021 क्लाईमेट चेंज रिपोर्ट.

शर्मा, वी. (2019). जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण, जयपुर: शिक्षा प्रकाशन.

सिंह, आर. (2018). पर्यावरण शिक्षा, नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान.

गुप्ता, पी. (2016). पर्यावरण अध्ययन, आगरा: साहित्य भवन.

वर्मा, एस. (2020). मानव विकास, लखनऊ: विश्वविद्यालय प्रकाशन.

जोशी, ए. (2015). सतत विकास की अवधारणा, दिल्ली: हिंदी माध्यम निदेशालय.

0% Overall Similarity

NO MATCHES FOUND

This submission did not match any of the content we compared it against.